Study Material (Set-2)

STD-VII **SANSKRIT**

चतुर्थः पाठः **अहम् आम्रम्**

नीचे दिए गए संस्कृत वाक्यों को अनुवाद के साथ अपनी संस्कृत उत्तर-पुस्तिका में लिखें :-

हे बालक ! किम् त्वम् माम् पश्यसि ?

-हे लड़के ! क्या तुम मुझे देखे हो ?

अहम् तव प्रियम् आम्रफलम् अस्मि |

-मैं तुम्हारा प्यारा आम का फल हूँ |

साम्प्रतम् अहम् पक्वं मधुरं सरसं च परम् एतस्मात् पूर्वम् अहम् बीजरुपेण उद्यानस्य एकस्मिन कोणे अंधकारपूर्णे गर्ते अवसम् |

-बाद में मैं पके हुए मीठे और रसीले परन्तु इसके पहले मैं बीज के रूप में बगीचे के एक कोने में अन्धकार भरे गड्ढे में रहता था |

कश्चित् जनः माम् बीजं जलेन असिन्चत्, महयम् खाद्यं च अयच्छत् |

-कोई व्यक्ति मेरे बीज को जल दिया और मुझे खाद दिया |

भोजनं खादित्वा जलं च पीत्वा अहं पुष्टः अभवम् |

-भोजन खाकर और जल पीकर मैं पुष्ट हो गया |

शनैः शनैः अंकुरः भूत्वा अहं बहिः आगच्छम् |

-धीरे-धीरे अंकुर होकर मैं बाहर आ गया |

पूर्वम् अहं लघुः पादपः आसम् |

-पहले मैं छोटा पौधा था |

क्रमेण अहं दीर्घः सघनः वृक्षः अभवम् |

-क्रम से मैं बड़ा घना पेड़ हो गया |

अधुना मम पत्राणि हरितानि छाया च शीतला भवति |

-अब मेरे पत्ते हरे और छाया शीतल होती है |

वसन्तकाले यदा मम उपरि स्थित्वा कोकिल: गायति, मम अति गर्व: भवति |

-वसंतकाल में जब मेरे ऊपर बैठकर कोयल गाती है,मुझे अत्यन्त गर्व होता है |

यदा वृक्षस्य अध: श्रान्ता: पथिका: विश्रामं कुर्वन्ति, मम सन्तोष: जायते |

जब पेड़ के नीचे थके यात्री विश्राम करते हैं, मुझे सन्तोष होता है |

मम पत्राणि उत्सवानां शोभा वर्धयन्ति |

-मेरे पत्ते त्योहारों की शोभा बढ़ाते हैं |

एतत् दृष्ट्वा चितं में प्रसन्नम् भवति |

-यह देखकर मन में ख़ुशी होती है |

यदा त्वं तथा अहम् अपि ग्रीष्मकालस्य प्रतीक्षां करोमि |

-जिस प्रकार तुम और मैं भी गर्मी के समय का इन्तजार करता हूँ |

पश्य, सूर्यस्य तीव्रेण आतपेन मम फलानि अधुना पक्वानि |

-देखो, सूरज के तेज ताप से मेरे फल अब पक गएँ |

पक्वानि अपक्वानि वा, आम्रफलानि तु सर्वथा गुणकराणि सन्ति |

-पके या कच्चे, आम के फल तो हमेशा गुणकारी हैं |

किम् इदानीं भवान् माम् खादितुम इच्छति |

-क्या इस प्रकार आप मुझे खाना चाहते है |

खादतु, खादतु नन्दतु च |

-खाइए, खाइए और ख़ुशी मनाइए |

अहम् सर्वेषाम् प्रियं, विशेषत: बालकान् |

-मैं सबका प्यारा, विशेषकर बच्चों का |

मम फलानि खादित्वा सर्वे नन्दन्तु |

-मेरे फल खाकर सब खुश होते हैं |

मम जीवनं परोपकाराय एव |

-मेरा जीवन दूसरों की भलाई के लिए ही है |

अभ्यास :- (लिखित)

लिखित के प्रत्येक प्रश्नोत्तरों को अपनी उतर-पुस्तिका में लिखें :-

प्र॰-1. एकपदेन उत्तरत :-

1) पूर्वम् आम्रम् केन रूपेण अवसत् | **(बीजरूपेण)**
2) कश्चित् जन: बीजं केन असिंचत् | **(जलेन)**
3) अधुना लघु: पादप: कीदृश: वृक्ष: अस्ति ? **(दीर्घ:)**
4) वसंतकाले वृक्षस्य उपरि क: गायति ? **(कोकिल:)**
5) क: आम्रम् खादितुम इच्छति ? **(सर्व:)**
6) आम्रम् विशेषरुपेण केषां प्रियम् ? **(बालकानाम्)**
7) आम्रवृक्षस्य जीवनम् किमर्थं भवति ? **(परोपकाराय)**

प्र॰-2. पाठम् आधृत्य रिक्तस्थाननि पूरयत :-

1) भोजनं खादित्वा जलम् च पीत्वा अहम् पुष्ट: अभवम् |
2) वसन्तकाले आम्रवृक्षस्य कोकिल: गायति |
3) सूर्यस्य तीव्रेण आतपेन आम्रवृक्षस्य फलानि पक्वानि भवन्ति |

प्र॰-4. मंजूषाया उचितपदेन अनुच्छेदस्य रिक्तस्थानानि पूरयत :-

आम्रम् मम प्रियं फलम् अस्ति | ह्य: पितामहः मह्यम् एकम् आम्रम् अयच्छतत् | स: माम अंवदत्, एतत् अतीव सरसम् अस्ति |

प्र॰-5. रंजितपदं संशोध्य वाक्यं पुन: लिखत :-

1) **सूर्यस्य आतपस्य आम्रफलानि पक्वानि भवन्ति |**

-सूर्यस्य आतपेन आम्रफलानि पक्वानि भवन्ति |

2) **मम जीवनम् परोपकारम् एव |**

-मम जीवनम् परोपकाराय एव |

3) **आम्रवृक्षस्य पत्राणि उत्सवा: शोभा वर्धयन्ति |**

-आम्रवृक्षस्य पत्राणि उत्सवस्य शोभा वर्ध्यन्ति |

4) **आम्रवृक्षस्य छाया शीतल: भवति |**

-आम्रवृक्षस्य छाया शीतला: भवति |

5) **कश्चित् जन: माम् जलम् असिंचत् |**

-कश्चित् जन: माम् जलेन असिंचत् |

स्वयं करें :-

प्र॰-1. पाठ का शब्दार्थ याद करें |

प्र॰-2. पाठ का अनुवाद याद करें |

प्र॰-3. पाठ के सभी प्रश्नोत्तर याद करें |

प्र॰-4. मौखिक के प्रश्न-1 का (क), (ख) और (ग) का सही मिलान अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखें |

प्र॰-5. लिखित का प्रश्न-3 और उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखें |

---------------XXXXX-------------